

अध्याय ~23

अलंकार

काव्य में भाषा को सुसज्जित, सुन्दर और आकर्षक बनाने के लिए जिन विशेष शब्दार्थ का प्रयोग होता है या जिन उपकरणों, शैलियों से काव्य की सुन्दरता बढ़ती है, वे अलंकार कहलाते हैं।



अलंकार से तात्पर्य

अलंकार शब्द की उत्पत्ति 'अलम्' धातु में 'कार' प्रत्यय लगाने से हुई है। अलम् का शाब्दिक अर्थ 'आभूषण' है। जिस प्रकार आभूषणों से शरीर की सुन्दरता बढ़ती है, ठीक उसी प्रकार अलंकारों के प्रयोग से काव्य की शोभा बढ़ती है। अन्य शब्दों में काव्य की शोभा बढ़ाने वाले तत्वों को अलंकार कहते हैं। अलंकार के चार भेद हैं

1. शब्दालंकार
2. अर्थालंकार
3. उभयालंकार
4. पाश्चात्य अलंकार

1. शब्दालंकार

काव्य में शब्दगत चमत्कार को शब्दालंकार कहते हैं। शब्दालंकार काव्य के शब्दों पर आश्रित होता है। शब्दालंकार मुख्य रूप से सात हैं, जो निम्न प्रकार हैं

- (i) अनुप्रास
- (ii) यमक
- (iii) श्लेष
- (iv) वक्रोक्ति
- (v) पुनरुक्तिप्रकाश
- (vi) पुनरुक्तिवदाभास
- (vii) वीप्सा

अनुप्रास

जहाँ काव्य में एक या अनेक व्यंजन वर्णों की पास-पास तथा क्रमानुसार आवृत्ति हो, उसे 'अनुप्रास अलंकार' कहते हैं; जैसे—

चारु चन्द्र की चंचल किरणों, खेल रही थी जल-थल में।

उपर्युक्त पंक्ति में **च** वर्ण की आवृत्ति पास-पास तथा क्रमानुसार हो रही है। अतः यहाँ अनुप्रास अलंकार है।

अनुप्रास अलंकार के पाँच भेद होते हैं, जो निम्नलिखित हैं

अलंकार	परिभाषा	उदाहरण
छेकानुप्रास	जहाँ एक या अनेक वर्णों की एक ही क्रम में एक बार आवृत्ति हो, वहाँ छेकानुप्रास अलंकार होता है।	<i>“रीझि रीझि, रहसि रहसि हैंसि हैंसि उठे, साँसैं भरि आँसू भरि कहत दर्ई दर्ई।”</i> • यहाँ 'रीझि-रीझि', 'रहसि-रहसि', 'हैंसि-हैंसि' तथा 'दर्ई-दर्ई' में व्यंजन वर्णों की आवृत्ति समान क्रम व स्वरूप में हुई है इसलिए यहाँ छेकानुप्रास अलंकार है।
वृत्यानुप्रास	जहाँ एक या अनेक व्यंजनों की अनेक बार स्वरूपतः व क्रमतः आवृत्ति हो, वहाँ वृत्यानुप्रास अलंकार होता है।	<i>‘कंकन, किंकिनि, नूपुर, धुनि, सुनि’</i> • यहाँ पर 'न' की क्रमगत आवृत्ति पाँच बार हुई है और स्वरूपतः आवृत्ति (नि) तीन बार हुई है। अतः यहाँ वृत्यानुप्रास है।
श्रुत्यानुप्रास	जहाँ एक ही उच्चारण स्थान से बोले जाने वाले वर्णों की आवृत्ति होती है, वहाँ श्रुत्यानुप्रास अलंकार होता है।	<i>‘तुलसीदास सीदति निसिदिन देखत तुम्हार निदुराई’</i> • यहाँ 'त', 'द', 'स', 'न' एक ही उच्चारण स्थान (दन्त्य से उच्चारण) से उच्चरित होने वाले वर्णों की कई बार आवृत्ति हुई है, अतः यहाँ श्रुत्यानुप्रास अलंकार है।
अन्त्यानुप्रास	जहाँ पद के अन्त के एक ही वर्ण और एक ही स्वर की आवृत्ति हो, वहाँ अन्त्यानुप्रास अलंकार होता है।	<i>“जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीश तिहुँ लोक उजागर।”</i> • यहाँ दोनों पदों के अन्त में 'आगर' की आवृत्ति हुई है, अतः अन्त्यानुप्रास अलंकार है।
लाटानुप्रास	जहाँ समानार्थक शब्दों या वाक्यांशों की आवृत्ति हो परन्तु अर्थ में अन्तर हो, वहाँ लाटानुप्रास अलंकार होता है।	<i>“पूत सपूत, तो क्यों धन संचय? पूत कपूत, तो क्यों धन संचय?”</i> • यहाँ प्रथम और द्वितीय पंक्तियों में एक ही अर्थ वाले शब्दों का प्रयोग हुआ है परन्तु प्रथम और द्वितीय पंक्ति में अन्तर स्पष्ट है, अतः यहाँ लाटानुप्रास अलंकार है।

अलंकार

यमक

यमक का शाब्दिक अर्थ 'युग्मक अर्थात् जोड़ा' है। जहाँ एक शब्द या शब्द समूह की एक साथ या अलग-अलग पद में आवृत्ति हो किन्तु उनका अर्थ प्रत्येक बार भिन्न हो, वहाँ यमक अलंकार होता है। यमक अलंकार में शब्द की दो बार आवृत्ति होती है; जैसे—

“जेते तुम तारे, तेते नभ में न तारे हैं”

उपर्युक्त पंक्ति में 'तारे' शब्द दो बार आया है परन्तु दोनों का अर्थ भिन्न-भिन्न है। प्रथम का अर्थ 'तारण करना' या 'उद्धार करना' है और द्वितीय 'तारे' का अर्थ 'तारागण' (आकाशीय) है, अतः यहाँ यमक अलंकार है।

श्लेष

श्लेष का शाब्दिक अर्थ होता है—चिपका हुआ। जहाँ एक शब्द जोड़े के रूप में उपस्थित न होकर अलग-अलग कथन में उपस्थित होता है और प्रत्येक बार उसका अर्थ अलग होता है। वहाँ श्लेष अलंकार होता है; जैसे—

“रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरै, मोती मानुष चून॥”

उपर्युक्त पंक्तियों में यहाँ 'पानी' के तीन अर्थ हैं—मोती के अर्थ में चमक, मानुष के अर्थ में प्रतिष्ठा और चून के अर्थ में जल है, अतः यहाँ श्लेष अलंकार है।

वक्रोक्ति

जहाँ पर वक्ता (बोलने वाला) द्वारा किसी भिन्न अभिप्राय से व्यक्त किए गए कथन का श्रोता (सुनने वाला) अपने अनुसार भिन्न अर्थ की कल्पना कर लेता है, वहाँ वक्रोक्ति अलंकार होता है। इसके दो भेद हैं—श्लेष वक्रोक्ति और काकु वक्रोक्ति।

- **श्लेष वक्रोक्ति** जहाँ श्रोता, वक्ता के कथन से अपनी रुचि या परिस्थिति के अनुकूल भिन्न अर्थ ग्रहण करता है, वहाँ श्लेष वक्रोक्ति अलंकार होता है; जैसे—

को तुम हो इत आये कहा,
घनश्याम हो तू किन्तु बरसों।

उपर्युक्त पंक्तियों में घनश्याम के दो अर्थ हैं—श्री कृष्णा और काले बादल। यहाँ श्रोता ने घनश्याम का अर्थ श्रीकृष्ण न ग्रहण न करके काले बादल ग्रहण किया है। अतः यहाँ घनश्याम के दो अर्थ होने के कारण श्लेष वक्रोक्ति अलंकार है।

- **काकु वक्रोक्ति** जहाँ किसी कथन का कण्ठ की ध्वनि के कारण दूसरा अर्थ निकलता है, वहाँ काकु वक्रोक्ति अलंकार होता है; जैसे—

उसने कहा : जाओ मत, बैठो यहाँ।
मैंने सुना : जाओ, मत बैठो।

उपर्युक्त पंक्तियों में उच्चारण के कारण वक्ता ने कुछ और कहा और श्रोता ने कुछ और समझ लिया। वक्ता ने रुकने के लिए कहा जबकि श्रोता ने समझा कि उसे जाने के लिए कहा जा रहा। अतः उच्चारण के कारण वक्ता और श्रोता द्वारा अलग-अलग अर्थ ग्रहण किया गया इसलिए यहाँ काकु वक्रोक्ति अलंकार है।

पुनरुक्तिप्रकाश

पुनरुक्ति का शाब्दिक अर्थ है—'पुनः दोहराना'। जब किसी काव्य में सौन्दर्यता उत्पन्न करने के लिए एक ही शब्द को दो बार दोहराया जाता है, वहाँ पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार होता है। इस अलंकार में शब्द की आवृत्ति तो दो बार होती है, परन्तु उसके अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं होता;

जैसे—

“ठौर-ठौर विहार करती सुन्दरी
सुरनारियाँ।”

उपर्युक्त पंक्तियों में 'ठौर-ठौर' की आवृत्ति में पुनरुक्तिप्रकाश है। दोनों 'ठौर' का अर्थ 'जगह-जगह' है, परन्तु पुनरुक्ति से कथन में बल आ गया है।

पुनरुक्तिवदाभास

जहाँ कथन में पुनरुक्ति का आभास होता है, वहाँ पुनरुक्तिवदाभास अलंकार होता है;

जैसे—

“पुनि फिरि राम निकट सो आई।”

उपर्युक्त पंक्ति में 'पुनि' और 'फिरि' का समान अर्थ प्रतीत होता है, परन्तु पुनि का अर्थ-पुनः (फिर) है और 'फिरि' का अर्थ लौटकर होने से यहाँ पुनरुक्तिवदाभास अलंकार है।

वीप्सा

जब किसी काव्य में आदर, हर्ष, शोक, आश्चर्य, घृणा, मन के भाव आदि को को प्रकट करने के लिए एक शब्द की पुनरावृत्ति होती है, तो वहाँ वीप्सा अलंकार होता है; जैसे—

बार-बार गर्जन वर्षण है मूसलधार,
हृदय थाम लेता संसार सुन-सुन घोर वज्र हुंकार।

उपर्युक्त पंक्तियों में 'बार-बार' और 'सुन-सुन' की पुनरावृत्ति हुई है (एक ही शब्द एक से अधिक बार) जिससे वर्ण और बादलों का प्रभाव और भी गहरा हो गया है।

2. अर्थालंकार

साहित्य में अर्थगत चमत्कार को अर्थालंकार कहते हैं अर्थात् जहाँ पर अर्थ के कारण किसी काव्य के सौन्दर्य में वृद्धि होती है, वहाँ अर्थालंकार होता है। अर्थालंकार काव्य के अर्थ पर आश्रित होते हैं।

अर्थालंकार के प्रमुख भेद, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, भ्रान्तिमान, सन्देह, दृष्टान्त, अतिशयोक्ति, विभावना, अन्योक्ति, विरोधाभास, विशेषोक्ति, प्रतीप तथा अर्थान्तरन्यास हैं।

उपमा

समान धर्म के आधार पर जहाँ एक वस्तु की समानता या तुलना किसी दूसरी वस्तु से की जाती है, वहाँ उपमा अलंकार होता है।

उपमा के चार अंग हैं

- उपमेय** वर्णनीय वस्तु जिसकी उपमा या समानता दी जाती है, उसे 'उपमेय' कहते हैं; जैसे—सीता का मुख चन्द्रमा के समान सुन्दर है। वाक्य में 'मुख' की चन्द्रमा से समानता बताई गई है, अतः मुख उपमेय है।
- उपमान** जिससे उपमेय की समानता या तुलना की जाती है, उसे उपमान कहते हैं; जैसे—मुख (उपमेय) की समानता चन्द्रमा से की गई है, अतः चन्द्रमा उपमान है।
- साधारण धर्म** जिस गुण के लिए उपमा दी जाती है, उसे साधारण धर्म कहते हैं। उक्त उदाहरण में 'सुन्दरता' के लिए उपमा दी गई है, अतः 'सुन्दरता' साधारण धर्म है।
- वाचक शब्द** जिस शब्द के द्वारा उपमा दी जाती है, उसे वाचक शब्द कहते हैं। उपर्युक्त उदाहरण में 'समान' शब्द वाचक है। इसके अतिरिक्त ऐसा, जैसा, सा, सदृश आदि शब्द वाचक शब्द के उदाहरण हैं।

उपमा के भेद

- **पूर्णोपमा** जहाँ उपमा के चारों अंग विद्यमान हों, वहाँ पूर्णोपमा अलंकार होता है; जैसे—
“प्रातः नभः था बहुत नीला शंख जैसे”।
उपर्युक्त काव्य पंक्ति में ‘प्रातःकालीन नभः’ उपमेय है, शंख उपमान है, ‘नीला साधारण’ धर्म है और ‘जैसे’ वाचक शब्द है। यहाँ उपमा के चारों अंग उपस्थित हैं, अतः यहाँ पूर्णोपमा अलंकार होगा।
- **लुप्तोपमा** जहाँ उपमा के एक या अनेक अंगों का अभाव हो, वहाँ लुप्तोपमा अलंकार होता है; जैसे—
मखमल के झूले पड़े, हाथी सा टीला
उपर्युक्त काव्य पंक्ति में ‘टीला’ उपमेय है, ‘हाथी’ उपमान एवं ‘सा’ वाचक है, किन्तु इसमें साधारण धर्म नहीं है। वह छिपा हुआ है। कवि का आशय है “मखमल के झूले पड़े विशाल हाथी सा टीला” यहाँ ‘विशाल’ जैसा कोई साधारण धर्म लुप्त है, अतः इस प्रकार के उपमा का प्रयोग लुप्तोपमा अलंकार कहलाता है।
- **मालोपमा** जहाँ किसी कथन में एक ही उपमेय के अनेक उपमान होते हैं, वहाँ मालोपमा अलंकार होता है; जैसे—
काम-सा रूप, प्रताप दिनेश-सा
सोम सा सील है राम महीप का।
उपर्युक्त उदाहरण में ‘राम’ उपमेय है, किन्तु उपमान, साधारण धर्म और वाचक शब्द तीन हैं—काम सा रूप, दिनेश सा प्रताप और सोम सा शील। इस प्रकार जहाँ उपमेय और उपमान अनेकों हों, वहाँ मालोपमा अलंकार होता है।

रूपक

जहाँ उपमेय में उपमान का निषेधरहित आरोप हो अर्थात् उपमेय और उपमान को एक रूप कह दिया जाए, वहाँ रूपक अलंकार होता है; जैसे—

पायो जी मैंने राम रतन धन पायो।

उपर्युक्त पंक्ति में राम रतन को ही धन कहा गया है। यहाँ उपमेय और उपमान (धन) में अन्तर स्पष्ट नहीं (राम रतन) हो पा रहा है। ‘राम रतन’ उपमेय पर ‘धन’ उपमान का आरोप है तथा दोनों में भिन्नता है। अतः यहाँ रूपक अलंकार है।

उत्प्रेक्षा

जहाँ उपमेय में उपमान की सम्भावना व्यक्त की जाए, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। इसमें जनु, मनु, मानो, जानो, इव जैसे वाचक शब्दों का प्रयोग होता है। उत्प्रेक्षा के तीन भेद हैं—वस्तुत्प्रेक्षा, हेतुत्प्रेक्षा और फलोत्प्रेक्षा। जैसे—

सिर फट गया उसका वहीं।
मानो अरुण रंग का घड़ा हो।

उपर्युक्त पंक्तियों में सिर के लाल रंग का घड़ा होने की कल्पना की जा रही है। यहाँ सिर-उपमेय है एवं लाल रंग का घड़ा उपमान है। उपमेय में उपमान के होने की कल्पना की जा रही है। अतः यहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार है।

भ्रान्तिमान

जहाँ समानता के कारण एक वस्तु में किसी दूसरी वस्तु का भ्रम हो, वहाँ भ्रान्तिमान अलंकार होता है; जैसे—

जान स्याम घन स्याम को, नाच उठे वन-मोर

उपर्युक्त पंक्ति में श्री कृष्ण को देखकर उनके साँवलेपन के कारण वन के मोरों को काले बादल होने का भ्रम होता है और वे वर्षा होने वाली है ऐसा समझकर मोर नाचने लगते हैं, अतः यहाँ भ्रान्तिमान अलंकार है।

सन्देह

जहाँ अति सादृश्य के कारण उपमेय और उपमान में अनिश्चय की स्थिति बनी रहे अर्थात् जब उपमेय में अन्य किसी वस्तु का संशय उत्पन्न हो जाए, तो वहाँ सन्देह अलंकार होता है; जैसे—

“सारी बीच नारी है या नारी बीच सारी है,
कि सारी की नारी है कि नारी की ही सारी।”

उपर्युक्त पंक्तियों में नारी और साड़ी में सन्देह बना हुआ है। साड़ी के बीच नारी है या नारी के बीच साड़ी है इसका निश्चय नहीं हो पाने के कारण यहाँ सन्देह अलंकार है।

दृष्टान्त

जहाँ किसी बात को स्पष्ट करने के लिए सादृश्यमूलक दृष्टान्त अर्थात् उदाहरण सहित प्रस्तुत किया जाता है, वहाँ दृष्टान्त अलंकार होता है; जैसे—

जो रहीम उत्तम प्रकृति का कर सकत कुसंग।
चंदन विष व्यापत नहीं लिपटे रहत भुजंगा।

उपर्युक्त पंक्तियों में कहा गया है कि जो मनुष्य उत्तम प्रकृति का होता है उस पर कोई दुष्ट व्यक्ति का प्रभाव नहीं पड़ता है। जिस प्रकार चन्दन के वृक्ष पर विषधारी सर्प लिपटे रहते हैं किन्तु उसकी सुगन्ध पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। यहाँ पर पहली पंक्ति की बात को दूसरी पंक्ति के उदाहरण के साथ प्रस्तुत किया गया, अतः यहाँ दृष्टान्त अलंकार है।

अतिशयोक्ति

जहाँ किसी विषयवस्तु का लोकमर्यादा के विरुद्ध बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया जाता है, वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है; जैसे—

“हनुमान की पूँछ में, लगन न पाई आग।
सारी लंका जरि गई, गए निशाचर भाग।”

उपर्युक्त पंक्तियों में हनुमान की पूँछ में आग लगने के पहले ही सारी लंका का जलना और राक्षसों के भागने का बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन होने से अतिशयोक्ति अलंकार है।

विभावना

जहाँ कारण के बिना कार्य के होने का वर्णन हो, वहाँ विभावना अलंकार होता है; जैसे—

“बिनु पग चलइ सुनइ बिनु काना। कर बिनु करम करै विधि नाना।।
आनन रहित सकल रस भोगी। बिनु बानी वक्ता बड़ जोगी।।”

उपर्युक्त पंक्तियों में पैरों के बिना चलना, कानों के बिना सुनना, बिना हाथों के विविध कार्य करना, बिना मुख के सभी वस्तुओं को ग्रहण करना और वाणी के बिना वक्ता होने का उल्लेख होने से विभावना अलंकार है।

अन्योक्ति

जहाँ किसी वस्तु या व्यक्ति को लक्ष्य कर कही जाने वाली बात दूसरे के लिए कही जाए, वहाँ अन्योक्ति अलंकार होता है; जैसे—

“फूलों के आसपास रहते हैं। फिर भी काँटे उदास रहते हैं।।”

उपर्युक्त पंक्तियों में फूलों और काँटों के माध्यम से मनुष्य को लक्षित किया गया है। इसमें फूल ‘सुख-सुविधा’ का प्रतीक है और काँटे ‘दुःख’ का प्रतीक है। अतः यहाँ सभी प्रकार की सुख-सुविधाएँ होते हुए भी दुःखी प्राणियों का वर्णन किया गया है। अतः यहाँ अन्योक्ति अलंकार है।

विरोधाभास

जहाँ वास्तविक विरोध न होने पर भी विरोध का आभास हो, वहाँ विरोधाभास अलंकार होता है;

जैसे—

“या अनुरागी चित्त की, गति समुझै नहिं कोय।
ज्यों ज्यों बूझै स्याम रंग, त्यों त्यों उजलों होय॥”

उपर्युक्त पंक्तियों में कवि यह कहना चाहता है कि हमारे अनुरागी मन की गति को कोई भी नहीं समझ सकता है, क्योंकि यह जैसे-जैसे कृष्ण भक्ति के रंग में डूबता जाता है, वैसे-वैसे ही उसके विकार दूर होते चले जाते हैं।

यहाँ कोई भी सामान्य बुद्धि का पाठक यह विरोध कर सकता है कि जो काले रंग में डूबता है, वह उज्ज्वल कैसे हो सकता है। इस प्रकार विरोध का आभास होने के कारण यहाँ विरोधाभास अलंकार माना जाता है।

विशेषोक्ति

जहाँ कारण के रहने पर भी कार्य नहीं होता है, वहाँ विशेषोक्ति अलंकार होता है; जैसे—

दो-दो मेघ बरसते मैं प्यासी की प्यासी।
नीर भरे नित प्रति रहै, तऊ न प्यास बुझाई॥

उपर्युक्त पंक्तियों में यह कहा गया है कि दो-दो मेघ बरस रहे हैं फिर भी मैं प्यासी की प्यासी हूँ। यहाँ पर कारण तो है कि वर्षा हो रही है, परन्तु प्यास नहीं बुझ रही है अर्थात् कार्य शुरू तो हुआ, परन्तु उस कार्य का कोई मोल नहीं है इसलिए यहाँ पर विशेषोक्ति अलंकार है।

प्रतीप

प्रतीप का शाब्दिक अर्थ है—‘उल्टा या विपरीत’। जहाँ उपमेय का कथन उपमान के रूप में तथा उपमान का उपमेय के रूप में किया जाता है, वहाँ प्रतीप अलंकार होता है;

जैसे—

“उतारि नहाए जमुन जल, जो शरीर सम स्याम”

उपर्युक्त पंक्ति में यमुना के श्याम जल की समानता रामचन्द्र के शरीर से देकर उसे उपमेय बना दिया है, अतः यहाँ प्रतीप अलंकार है।

अर्थान्तरन्यास

जहाँ किसी सामान्य बात का विशेष बात से तथा विशेष बात का सामान्य बात से समर्थन किया जाए, वहाँ अर्थान्तरन्यास अलंकार होता है;

जैसे—

बड़ें न हूजे गुनन बिनु, निरद बड़ाई पाय।
कहत धतूरे सों कनक, गहनो गढ़ा न जाय॥

उपर्युक्त पंक्तियों में सामान्य कथन—‘कोई भी मनुष्य चाहे कितना बड़ा ही यश क्यों न प्राप्त कर ले, परन्तु बिना गुणों के महान नहीं बन सकता’ का समर्थन विशेष जैसे—‘धतूरे को कनक (सोना) कहने से वह सोना नहीं बन जाता और न ही उससे गहनें बनाए जा सकते हैं’ से किया गया है।

3. उभयालंकार

जो शब्द और अर्थ दोनों में चमत्कार की वृद्धि करते हैं, उन्हें उभयालंकार कहते हैं। इसके दो भेद हैं

- (i) **संकर** जहाँ पर दो या अधिक अलंकार आपस में ‘नीर-क्षीर’ के समान रूप से घुले-मिले रहते हैं, वहाँ ‘संकर’ अलंकार होता है; जैसे—

सठ सुधरहिं सत संगति पाई।
पारस-परस कुधातु सुहाई।

उपर्युक्त पंक्तियों में ‘पारस-परस’ में अनुप्रास तथा यमक दोनों अलंकार इस प्रकार मिले हैं कि पृथक् करना सम्भव नहीं है, अतः यहाँ ‘संकर’ अलंकार है।

- (ii) **संसृष्टि** जहाँ दो अथवा दो से अधिक अलंकार परस्पर मिलकर भी स्पष्ट रहे अर्थात् उनकी पहचान में किसी भी प्रकार की कोई कठिनाई नहीं होती वहाँ ‘संसृष्टि’ अलंकार होता है; जैसे—

भूपति भवतु सुभायँ सुहाव।
सुरपति सदनु न परतर पावा।
मनिमय रचित चारु चौबारे।
जनु रतिपति निज हाथ सँवारे॥

उपर्युक्त पंक्तियों में प्रथम दो चरणों में प्रतीप अलंकार है तथा बाद के दो चरणों में उत्प्रेक्षा अलंकार। यहाँ प्रतीप और उत्प्रेक्षा की संसृष्टि है। अतः यहाँ संसृष्टि अलंकार है।

4. पाश्चात्य अलंकार

हिन्दी साहित्य पर पाश्चात्य प्रभाव पड़ने के फलस्वरूप पाश्चात्य अलंकारों का समावेश हुआ है। प्रमुख पाश्चात्य अलंकार मानवीकरण, भावोक्ति, ध्वन्यात्मकता और विरोध चमत्कार है।

परीक्षा की दृष्टि से मानवीकरण अलंकार ही महत्वपूर्ण है, इसलिए यहाँ उसी का विवरण दिया गया है।

मानवीकरण

जहाँ प्राकृतिक वस्तुओं; जैसे-पेड़, पौधे, बादल आदि में मानवीय भावनाओं का वर्णन हो या निर्जीव वस्तुओं की सजीव के रूप में चित्रित किया गया हो वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है;

जैसे—

फूल हँसे कलियाँ मुसकाई।

उपर्युक्त पंक्ति में फूलों के हँसने और कलियों के मुस्कुराने का वर्णन किया गया है, परन्तु ये सब मानवीय क्रियाएँ हैं। यहाँ प्रकृति के माध्यम से मानवीय भावों को चित्रित किया गया है। अतः यहाँ मानवीकरण अलंकार है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली

1. 'सन्देसनि मधुवन-कूप भरे' में कौन-सा अलंकार है?
(उत्तराखण्ड समूह-ग भर्ती परीक्षा 2014)
(a) उपमा (b) अतिशयोक्ति (c) इनमें से कोई नहीं (d) अनुप्रास
2. 'काली घटा का घमण्ड घटा' उपरोक्त पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?
(UPSSSC लेखपाल परीक्षा 2015)
(a) रूपक (b) यमक (c) उपमा (d) उत्प्रेक्षा
3. "अम्बर-पनघट में डुबो रही, तारा-घट ऊषा-नागरी" में कौन-सा अलंकार है?
(UPTET 2018/UPSSSC लेखपाल परीक्षा 2015)
(a) यमक (b) रूपक (c) उपमा (d) उत्प्रेक्षा
4. 'उदित उदय-गिरि मंच पर रघुबर बाल पतंग' में कौन-सा अलंकार है?
(CGPSC Pre 2013)
(a) उपमा (b) रूपक (c) उत्प्रेक्षा (d) भ्रान्तिमान
5. 'खिली हुई हवा आई फिरकी सी आई, चली गई' पंक्ति में अलंकार है
(UPSSSC कनिष्ठ सहायक परीक्षा 2015)
(a) सम्भावना (b) उत्प्रेक्षा (c) उपमा (d) अनुप्रास
6. "पापी मनुज भी आज मुख से, राम नाम निकालते" इस काव्य पंक्ति में अलंकार है
(UPSSSC कनिष्ठ सहायक परीक्षा 2015)
(a) विभावना (b) उदाहरण (c) विरोधाभास (d) दृष्टान्त
7. "दिवसावसान का समय मेघमय आसमान से उतर रही है वह संध्या सुन्दरी परी-सी धीरे-धीरे-धीरे।"
उपरोक्त पंक्तियों में अलंकार है (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)
(a) उपमा (b) रूपक (c) यमक (d) इनमें से कोई नहीं
8. "तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए।"
उपरोक्त पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है?
(उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014/UPTET 2014)
(a) यमक (b) उत्प्रेक्षा (c) उपमा (d) अनुप्रास
9. 'अब रही गुलाब में अपत कटीली डारा'
उपरोक्त पंक्ति में अलंकार है (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)
(a) रूपक (b) यमक (c) अन्योक्ति (d) पुनरुक्ति
10. "पट-पीत मानहुँ तड़ित रुचि, सुचि नौमि जनक सुतावर।"
उपरोक्त पंक्ति में अलंकार है (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)
(a) उपमा (b) रूपक (c) उत्प्रेक्षा (d) उदाहरण
11. 'राम सों राम सिया सों सिया।'
उपरोक्त पंक्ति में अलंकार है (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)
(a) रूपक (b) उत्प्रेक्षा (c) उपमा (d) यमक
12. 'जेते तुम तारे, तेते नभ में न तारे हैं।'
उपरोक्त पंक्तियों में अलंकार है
(a) विरोधाभास (b) विशेषोक्ति (c) विभावना (d) यमक
13. 'नवजीवन दो घनश्याम हमें' में अलंकार है
(a) यमक (b) श्लेष (c) वीप्सा (d) अनुप्रास
14. 'केकी रव की नुपूर ध्वनि सुन जगती जगती की भूख प्यास' में अलंकार है
(a) अन्योक्ति (b) श्लेष (c) यमक (d) दृष्टान्त
15. 'विरमौ-विरमौ तात तनिक, अव सुनन हेतु बल नाहि' में अलंकार है
(a) यमक (b) श्लेष (c) वीप्सा (d) अनुप्रास
16. 'रघुपति राघव राजाराम' में अलंकार है
(a) वीप्सा (b) पुनरुक्ति (c) विरोधाभास (d) अनुप्रास
17. 'कै कै कारन रोवै बाला। जनु टूटै मोतिन्ह कै माला।'
उपरोक्त पंक्ति में अलंकार है
(a) उपमा (b) उत्प्रेक्षा (c) रूपक (d) सन्देह
18. जहाँ देखने सुनने में तो निन्दा-सी प्रतीत होती है पर होती है प्रशंसा, वहाँ कौन-सा अलंकार होता है?
(a) असंगत (b) व्याजस्तुति (c) पर्यायोक्ति (d) वक्रोक्ति
19. 'उल्का सी रानी दिशा दीप्त करती थी' पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?
(UPTET, 2016)
(a) यमक (b) रूपक (c) उत्प्रेक्षा (d) उपमा
20. "अधरों पर अलि मँडराते, केशों पर मुग्ध पपीहा"
(a) सन्देह (b) भ्रान्तिमान (c) वीप्सा (d) उत्प्रेक्षा
21. 'चरर मरर खुल गए अरर रक्फुटों से' में कौन-सा अलंकार है?
(a) अनुप्रास (b) यमक (c) श्लेष (d) उत्प्रेक्षा
22. "बड़े न हुजे गुनन बिनु विरद बड़ाई पाय। कहत धतूरे सों कनक, गहनों गढ़ो न जाय।"
उपरोक्त पंक्तियों में अलंकार है
(a) श्लेष (b) विरोधाभास (c) अर्थान्तरन्यास (d) वक्रोक्ति
23. "बिटपी बिटपी बँधी पड़ी रह गई मोह के पाश में"
इस पंक्ति में अलंकार है
(a) वृत्तानुप्रास (b) श्रुत्यानुप्रास (c) अन्त्यानुप्रास (d) लाटानुप्रास
24. जहाँ सामान्य बात का विशेष बात से तथा विशेष बात का सामान्य बात से समर्थन किया जाए वहाँ होता है
(a) तद्गुण (b) संकर (c) अर्थान्तरन्यास (d) श्लेष
25. जहाँ उपमेय में उपमान की सम्भावना की जाए, वहाँ अलंकार होता है
(a) उपमा (b) उत्प्रेक्षा (c) रूपक (d) भ्रान्तिमान
26. 'बीती विभावरी जागरी अम्बर पनघट में डुबो रही ताराघट उषा नागरी'
पंक्ति में कौन-सा अलंकार है? (UPTET 2020)
(a) यमक (b) उपमा (c) रूपक (d) उत्प्रेक्षा
27. "बिन घनस्याम धाम-धाम ब्रज मण्डल में, उधौ नित बसति बहार बरसा की है।" इस पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार है (UPTET 2020)
(a) रूपक (b) श्लेष (c) यमक (d) उपमा
28. "रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून। पानी गए न ऊबरे मोती मानस चून।"
उपरोक्त दोहे में कौन-सा अलंकार है? (UPTET 2020)
(a) रूपक (b) उपमा (c) श्लेष (d) उत्प्रेक्षा
29. सही विकल्प चुनिए।
'..... और शब्द चयन में विशेष ध्यान देने से कविता भाव सम्प्रेषण में सहायक होती है।'
(मध्य प्रदेश व्यावसायिक परीक्षा 2017)
(a) सर्वनाम (b) अलंकारों के सार्थक प्रयोग (c) संज्ञा के सार्थक प्रयोग (d) विशेषण

30. “सारंग लै सारंग चली कई सारंग की ओट सारंग झीनो पाइके सारंग कई गई चोट।” (UPSSSC कनिष्ठ सहायक परीक्षा 2016)
(a) श्लेष अलंकार (b) यमक अलंकार
(c) रूपक अलंकार (d) उत्प्रेक्षा अलंकार
31. ‘उपमा’ अलंकार किस अलंकार का उपभेद है? (UKSSSC VDO 2015)
(a) प्रश्नालंकार (b) श्लेषालंकार (c) अर्थालंकार (d) शब्दालंकार
32. ‘चरण-कमल बन्दौ हरिराई’
उपरोक्त पंक्ति में अलंकार है (UPTET 2016)
(a) उत्प्रेक्षा (b) यमक (c) रूपक (d) उपमा
33. किस पंक्ति में अपद्धति अलंकार है? (UPPSSC राजस्व निरीक्षक 2014)
(a) इसका मुख चंदू के समान है (b) चंदू इसके मुख के समान है
(c) इसका मुख ही चंदू है (d) यह चंदू नहीं मुख है
34. “तुम मांसहीन, तुम रक्तहीन, है अस्थिशेष तुम अस्थिहीन, तुम शुद्ध-बुद्ध आत्मा केवल, हे चिर पुराण हे चिर नवीन।” (UPTET 2019)
उपरोक्त पंक्तियों में कौन-सा अलंकार प्रयुक्त हुआ है?
(a) विरोधाभास (b) विशेषण विपर्यय
(c) मानवीकरण (d) दृष्टान्त
35. ‘दीप-सा मन जल चुका।’
इस पंक्ति में वाचक शब्द है
(a) दीप (b) मन (c) सा (d) जल चुका
36. ‘उसका मुख चन्द्रमा के समान सुन्दर है।’ इस वाक्य में साधारण धर्म है
(a) मुख (b) चन्द्रमा (c) के समान (d) सुन्दर
37. जहाँ एक शब्द या शब्द समूह अनेक बार आए किन्तु उनका अर्थ प्रत्येक बार भिन्न हो वहाँ अलंकार है
(a) यमक (b) श्लेष (c) वीप्सा (d) अनुप्रास
38. “जदपि सुजाति सुलच्छनी, सुबरन सरस सुवृत्त।
भूषण बिनु न बिराजई, कविता बनिता मित्त”
अलंकार को परिभाषित करने वाली उपरोक्त पंक्तियाँ किस कवि की हैं?
(a) केशवदास (b) बिहारीलाल (c) सेनापति (d) आचार्य दण्डी
39. “बाँधा था विधु को किसने, इन काली जंजीरों से।
मणिवाले फणियों का मुख क्यों भरा हुआ हीरों से।”
इन काव्य-पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है?
(UPSSSC कनिष्ठ सहायक परीक्षा 2020, 19)
(a) अनुप्रास (b) श्लेष (c) यमक (d) अतिशयोक्ति
40. अलंकार का नाम बताइए
“हनुमान की पूँछ में लगन न पाई आग।
लंका सिगरी जल गई, गए निसाचर भाग।”
(मध्य प्रदेश व्यावसायिक परीक्षा 2017)
(a) अतिशयोक्ति अलंकार (b) सन्देह अलंकार
(c) उत्प्रेक्षा अलंकार (d) अन्योक्ति अलंकार
41. अलंकार का नाम बताइए। (मध्य प्रदेश व्यावसायिक परीक्षा 2017)
“प्रिय-प्रवास की बात चलत ही,
सूखी गया तिय कोमल गाता।” (मध्य प्रदेश व्यावसायिक परीक्षा 2017)
(a) अतिशयोक्ति अलंकार (b) सन्देह अलंकार
(c) उत्प्रेक्षा अलंकार (d) अन्योक्ति अलंकार
42. “तीन बेर खाती थी वे तीन बेर खाती हैं” में अलंकार है
(a) अनुप्रास (b) श्लेष (c) यमक (d) अन्योक्ति
43. “अधोमुख रहति, उरध नहि चितवत, ज्यों गथ हारे थकित जुआरी।
छूटे चिहुर बदन कुम्हिलानो, ज्यों नलिनी हिमकट की मारी।”
उपरोक्त पंक्तियों में अलंकार है
(a) अनुप्रास (b) उत्प्रेक्षा (c) रूपक (d) उपमा
44. “नहि पराग नहि मधुर मधु, नहि विकास इहि काल।
अली कली ही सों बिंध्यौ, आगे कौन हवाला।”
उपरोक्त पंक्तियों में अलंकार है?
(a) रूपक (b) श्लेष (c) अन्योक्ति (d) उत्प्रेक्षा
45. ‘दीप सा हिय जल रहा है, कह दो तुम्हीं कैसे बुझाऊँ’ में अलंकार है
(a) लुप्तोपमा (b) मालोपमा (c) पूर्णोपमा (d) उपमेयोपमा
46. “तन्त्रीनाद कवित रस, सरस राग रतिरंग।
अनबूड़े बूड़े तिरे, जे बूड़े सब अंग।”
उपरोक्त पंक्तियों में अलंकार है
(a) परिसंख्या (b) विभावना (c) विरोधाभास (d) असंगति
47. “रहिमन जो गति दीप की, कुल कपूत गति सोय।
बारे उजियारै लगै, बढ़े अँधेरो होय।”
उपरोक्त पंक्तियों में अलंकार है
(a) उपमा (b) रूपक (c) यमक (d) श्लेष
48. “ध्वनि मयी कर के गिरि-कन्दरा,
कलित-कानन-केलि-निकुंज को।”
उपरोक्त पंक्तियों में अलंकार है।
(a) छेकानुप्रास (b) वृत्तानुप्रास (c) लाटानुप्रास (d) यमक
49. “कुन्द इन्दु सम देह, उमर रमन वरुण अमन” में कौन-सा अलंकार है?
(a) श्लेष (b) उपमा (c) अनुप्रास (d) रूपक
50. जहाँ बिना कारण के कार्य का होना पाया जाए, वहाँ कौन-सा अलंकार होता है?
(a) विरोधाभास (b) विशेषोक्ति (c) विभावना (d) भ्रान्तिमान
51. जहाँ उपमेय में अनेक उपमानों की शंका होती है, वहाँ कौन-सा अलंकार होता है?
(a) यमक (b) श्लेष (c) सन्देह (d) भ्रान्तिमान
52. “पूत कपूत तो क्यों धन संचय।
पूत सपूत तो क्यों धन संचय।”
उपरोक्त पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है?
(a) छेकानुप्रास (b) लाटानुप्रास (c) वृत्तानुप्रास (d) अन्थानुप्रास
53. निम्नलिखित पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है? (UPTET 2013)
“फूले कास सकल महि छाई।
जनु बरसा रिनु प्रकट बुझाई।”
(a) उपमा (b) उत्प्रेक्षा (c) रूपक (d) श्लेष
54. ‘हरि-पद कोमल कमल से’ इस पद में अलंकार है (UPTET 2013)
(a) उपमा (b) रूपक (c) प्रतीप (d) उत्प्रेक्षा
55. ‘तरनि-तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए’ में कौन-सा अलंकार है? (UPTET 2014)
(a) अनुप्रास (b) यमक (c) उत्प्रेक्षा (d) उपमा
56. ‘उसी तपस्वी से लम्बे थे, देवदार दो चार खड़े’ इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है? (UTET 2016)
(a) उपमा (b) प्रतीप (c) रूपक (d) उत्प्रेक्षा

57. 'नवल सुन्दर श्याम-शरीर की, सजल नीरद-सी कल-कान्ति थी।' में कौन-सा अलंकार है? (UPTET 2014)
(a) उपमा (b) रूपक (c) श्लेष (d) उत्प्रेक्षा
58. कूलन में केलि में कछारन में कुंजन में क्यारिन में कलित कलीन किलकंत है। इस काव्य-पंक्ति में कौन-सा अलंकार है? (UPSSSC कनिष्ठ सहायक परीक्षा 2020)
(a) अनुप्रास (b) रूपक (c) यमक (d) श्लेष
59. माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर।
कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर।
इस दोहे में कौन-सा अलंकार है? (UPSSSC कनिष्ठ सहायक परीक्षा 2020)
(a) रूपक (b) अनुप्रास (c) उपमा (d) यमक
60. 'काव्य की शोभा बढ़ाने वाले धर्मों को अलंकार कहते हैं।' इस उक्ति में प्रयुक्त 'धर्म' शब्द का क्या अर्थ है? (UPSSSC कनिष्ठ सहायक परीक्षा 2020)
(a) मजहब (b) गुण (c) सत्कर्म (d) कर्तव्य
61. 'कनक कनक ते सौगुनी मादकता अधिकाय। वा खाए बोराए जग या देखे बौराए।' दिए गए दोहे में किस अलंकार को दर्शाया गया है? (UP पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2017)
(a) उपमा (b) यमक (c) अनुप्रास (d) अन्योक्ति
62. जहाँ उपमेय में उपमान की सम्भावना प्रकट की जाती है, वहाँ अलंकार होता है। दिए गए विकल्पों में से सही का चयन करें। (UP पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2017)
(a) अनुप्रास (b) विभावना (c) उत्प्रेक्षा (d) श्लेष
63. इनमें से कौन-सा विकल्प 'शब्दालंकार' का भेद नहीं है? (UP पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2017)
(a) यमक (b) श्लेष (c) रूपक (d) अनुप्रास
64. 'मैया मैं तो चन्द्र-खिलौना लौहों।' पंक्ति में कौन-सा अलंकार है? (UP पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2017)
(a) रूपक (b) उत्प्रेक्षा (c) श्लेष (d) यमक
65. काली घटा का घमंड घटा—अलंकार बताइए (UP पुलिस कांस्टेबल परीक्षा 2018)
(a) यमक (b) उपमा (c) अनुप्रास (d) रूपक
66. "वृन्दावन बिहर फिरें, राधा नन्द किशोर।
जलद दामिनी जानि संग, डोलें बोलें मोर।।
पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?
(a) अतिशयोक्ति अलंकार (b) श्लेष अलंकार
(c) भ्रान्तिमान अलंकार (d) संदेह अलंकार
67. 'पीपर पात सरिस मन डोला' में अलंकार है
(a) उत्प्रेक्षा (b) रूपक (c) यमक (d) उपमा
68. "आगे नदिया पड़ी अपार, घोड़ा कैसे उतरे पार।
राणा ने देखा इस पार, तब तक चेतक था उस पार।।"
दी गई पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है? (UP पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2017)
(a) अतिशयोक्ति (b) उपमा (c) उत्प्रेक्षा (d) अनुप्रास
69. "कौन रोक सकता है उसकी गति?
गरज उठते जब मेघ, कौन रोक सकता विपुल नाद?"
पंक्तियों का रचनानुसार अलंकार पहचानिए। (UP पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2017)
(a) अर्थ श्लेष अलंकार (b) प्रश्न अलंकार
(c) वीप्सा अलंकार (d) शब्द श्लेष अलंकार
70. "तुलसी मन-मन्दिर में बिहरै", यह पंक्ति किस अलंकार से अलंकृत की गई है? (UP पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2017)
(a) मानवीकरण (b) रूपक (c) पुनरुक्ति प्रकाश (d) उपमा
71. "..... बताते हैं कि यहाँ शब्दों में चमत्कार है तथा बताते हैं कि यहाँ अर्थ में अद्भुत सौन्दर्य है। (UP पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2017)
(a) यमक, शब्दालंकार (b) रूपक, उपमा
(c) शब्दालंकार, अर्थालंकार (d) अनुप्रास, श्लेष
72. ".....", यह पंक्ति यमक अलंकार का भेद नहीं है।
(a) सूरज है जग का बुझा-बुझा (UP पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2017)
(b) तीर बेर खाती थीं वो तीन बेर खाती हैं
(c) कर का मनका डारि दे मन का मनका फेर
(d) खगकुल कुल-कुल-सा बोल रहा
73. ".....", यह पंक्ति अनुप्रास अलंकार का उदाहरण है। (UP पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2017)
(a) देखिए, फूल-सी बच्ची
(b) नवजीवन दो घनश्याम हमें
(c) चरण कमल बंदौ हरि राई
(d) तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए
74. 'चारु चन्द्र की चंचल किरणें खेल रही हैं जल थल में' में कौन-सा अलंकार है? (UP बी. एड. 2019)
(a) उपमा (b) श्लेष (c) यमक (d) अनुप्रास
75. "खिली हुई हवा आई फिरकी सी आई, चल गई"—पंक्ति में अलंकार है (UPSSSC कनिष्ठ सहायक परीक्षा 2015)
(a) उपमा (b) अनुप्रास (c) सम्भावना (d) उत्प्रेक्षा

उत्तरमाला

1. (b)	2. (b)	3. (b)	4. (a)	5. (c)	6. (c)	7. (a)	8. (d)	9. (c)	10. (c)
11. (d)	12. (d)	13. (b)	14. (c)	15. (c)	16. (d)	17. (b)	18. (b)	19. (d)	20. (b)
21. (a)	22. (c)	23. (b)	24. (c)	25. (b)	26. (c)	27. (b)	28. (c)	29. (b)	30. (b)
31. (c)	32. (c)	33. (d)	34. (a)	35. (c)	36. (d)	37. (a)	38. (a)	39. (d)	40. (a)
41. (a)	42. (c)	43. (b)	44. (c)	45. (c)	46. (c)	47. (d)	48. (b)	49. (b)	50. (c)
51. (c)	52. (b)	53. (b)	54. (a)	55. (a)	56. (b)	57. (a)	58. (a)	59. (d)	60. (b)
61. (b)	62. (c)	63. (c)	64. (a)	65. (a)	66. (c)	67. (d)	68. (a)	69. (b)	70. (b)
71. (c)	72. (a)	73. (d)	74. (d)	75. (a)					